निर्देशक - कीर्ति जैन

कीर्ति जैन ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर एवं, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से रंगनिर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। 1977 में कीर्ति जैन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से संकाय के रूप में जुड़ीं।1988 से 1995 तक यह रा. न. वि. की निर्देशक भी रहीं जिस दौरान इन्होंने 'थिएटर इन एजुकेशन कंपनी', रा. न. वि. के प्रकाशन विभाग व रीजनल रिसोर्स सेंटर, बंगलुरु की शुरुआत की।

कीर्ति जैन 'नटरंग प्रतिष्ठान', एक रंगमंच अभिलेखागार और प्रलेखन केंद्र की ट्रस्टी हैं। पूर्वा- एशियाई महिला निर्देशकों के नाट्य उत्सव एवं कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। इन्होंने कई भारतीय रंग निर्देशकों, विशेषकर महिला निर्देशकों के प्रदर्शन और कार्यप्रणाली को प्रलेखित किया है। ये राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय उत्सवों और सम्मेलनों में भाग लेती हैं, कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं और हिंदी रंग पत्रिका-नटरंग के प्रकाशन के साथ जुड़ी हुई हैं। रंगमंच में इनके योगदान के साथ यह दूरदर्शन में प्रोड्यूसर व रिटायरमेंट के बाद सलाहकार के रू में काम कर चुकी हैं। हाल ही में बादल सरकार पर इनकी क़िताब नियोगी द्वारा प्रकाशित की गई है।

उनके निर्देशन कार्यों में शामिल हैं- 'और कितने टुकड़े' विभाजन के बारे में, 'कौन ठगवा नगरिया लूटल हो' भूमंडलीकरण पर, 'सब कुछ चकाचक' युवाओं के लिए विलय पर आधारित नाटक, 'बग़दाद बर्निंग' इराक़ के अमेरिकी आक्रमण पर एक ब्लॉग से विकसित किया गया और 'हमारा शहर उस बरस' साम्प्रदायिक अशांति के बारे में बात करता है।

2010 में रंगमंच में इनके योगदान के लिए बी. वी. कारंथ पुरस्कार और 2011 में निर्देशन के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।